3. वैदिक काल

वैदिक संस्कृति

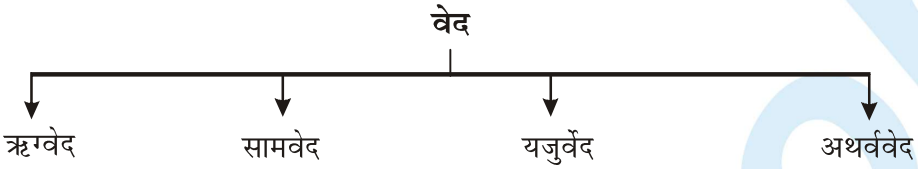

ऋग्वेद

- चार वर्गो में समाज का विभाजन ऋग्वेद के 10 वें मंडल के पुरूष सूक्त में है।
- ऋग्वेद में सर्वाधिक इन्द्र की 250 बार चर्चा की गई है।
- यह ऋचाओं में बद्ध है।
- इसमें कुल दस मण्डल एवं 1028 सूक्त हैं।
- दूसरे एवं सातवें मण्डल की ऋचायें सर्वाधिक प्राचीन हैं।
- आठवें मण्डल को 'खिल' कहा गया है।
- पहले व दसवें मण्डल की ऋचाये को बाद में जोड़ा गया।

सामवेद

- इसमें संकलित मंत्रों को देवताओं की स्तुति के समय गाया जाता था।
- कुल 1549 ऋचायें हैं जिनमें 75 के अतिरिक्त शेष ऋग्वेद से ली गयी है।
- इसका भारतीय संगीत के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

यजुर्वेद

- इसमें अनेक प्रकार के यज्ञों को सम्पन्न करने की विधियों का उल्लेख।
- यह पांच शाखाओं में विभक्त है। इसमें चार कृष्ण यजुर्वेद के एवं एक शुक्ल यजुर्वेद के अन्तर्गत आती है।
- यह गद्य व पद्य दोनों में लिखा गया है।

अथर्ववेद

- अथर्वा ऋषि द्वारा रचित।
- इसमें कुल 40 अध्याय एवं 71 सूक्त हैं
- महत्वपूर्ण विषय- ब्रह्मज्ञान, औषधि प्रयोग, रोग निवारण, तन्त्र-मन्त्र, टोना-टोटका आदि।

ऋग्वैदिक काल

- ऋग्वैदिक काल का एक मात्र स्रोत **ऋग्वेद** है।
- आर्यो की भाषा संस्कृत थी।
- सर्वप्रथम आर्य पंजाब में आकर बसे थे।
- ऋग्वेद में आर्यो के पांच कबीले थे

1. पुरू
2. द्रुहय
3. अनु
4. यदु
5. तुर्वस

ख आर्यों का मूल निवास स्थान मध्य एशिया है।

ख आर्य सबसे पहले सप्तसैन्धव प्रदेश में आकर बसे।

नदी	वर्तमान नाम
कुभ	काबुल
परुष्णी	रावी
सुवस्तु	स्वात
विपाशा	व्यास
वितस्ता	झेलम
अस्किनी	चेनाब
शतुद्री	सतलज
सदानीरा	गंडक

आर्य	प्रसिद्ध
प्रमुख देवता	इन्द्र
प्रमुख नदी	सिन्धु
पवित्र नदी	सरस्वती
भाषा	संस्कृत
व्यवसाय	पशुपालन
पेय पदार्थ	सोमरस

- पुरू कबीले को 'त्रास दस्यु' कहा जाता था
- ऋग्वेद में आम सभा जो समिति कहलाती थी राजा को चुनती थी ।
- सभा समृध लोगों की संस्था थी।
- ऋग्वेद में दस मण्डल, आठ अष्टक एवं 1028 सुक्त है।
- दाशराज युद्ध का उल्लेख ऋग्वेद के सातवें मंडल में है। यह युद्ध रावी (परूष्णी) नदी के तट पर लड़ा गया।
- सती प्रथा, बाल विवाह का प्रचलन नहीं था।
- ऋग्वेद में विधवा विवाह की जानकारी मिलती है।
- ऋग्वेद के मण्डूक सूक्त में ऋग्वैदिक शिक्षा पद्धति की झलक मिलती है।
- ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में शूद्रों का उल्लेख है।
- गविष्टी शब्द का प्रयोग युद्ध के लिए किया जाता था जिसका अर्थ है गायों की खोज।
- गाय को अघन्या (न मारने योग्य) कहा गया है।
- अग्नि को मनुष्य एवं देवता के बीच मध्यस्थ का देवता माना गया है।

प्राचीन नाम	संबंधित आधुनिक नाम
1. **उर्वरा**	जुते हुऐ खेत
2. **लांगल**	हल
3. **बृक**	बैल
4. **सीता**	हल से बनी नालियॉ
5. **करीष**	गोबर की खाद
6. **पर्जन्य**	बादल
7. **घन्त**	मरूस्थल

- अथर्ववेद में सभा एवं समिति को प्रजापति की दो पुत्रियों के समान माना है।
- वैदिककाल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पशु घोड़ा है।
- आर्य लोग धार्मिक अवसरों पर सोमरस पीते थी।

वेद	मुख्य ब्राह्मण
• ऋग्वेद	ऐतरेय ब्राह्मण
• युजवेद	शतपथ ब्राह्मण
वेद	**मुख्य उपनिषद्**
• सामवेद	छांदोग्य उपनिषद
• अथर्ववेद	मुण्डकोपनिषद

- ऋग्वैदिक काल में ऋण देकर ब्याज लेने वाले को बैकनाट कहा जाता था।
- आजीवन अविवाहित रहने वाली महिलाओं को अमाजु कहते थे।

उत्तरवैदिक काल

- लोहे की खोज उतर वैदिक काल में सर्वप्रथम आर्यों ने की।
- पुनर्जन्म का सिद्धान्त सर्वप्रथम शतपथ ब्राहमण में दिखाई देता है।
- उतर वैदिक काल में उच्च शासकीय अधिकारीयों को रत्नी कहते थे। जिनके संख्या 12 थी।
- इस काल में यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद एवं उपनिषदों की रचना हुई।
- उपनिषदों की कुल संख्या – 108
- पुराणों की संख्या – 18
- वेदांग की संख्या – 6
- **वेदांग–** शिक्षा, कला, व्याकरण, निरूक्त, छंद, ज्योतिष।

वेद	पुरोहित	दर्शन	प्रवर्तक
ऋग्वेद	होतृ	योग	पतंजलि
सामवेद	उदगातृ	सांख्य	कपिल
यजुर्वेद	अध्वर्यु	न्याय	गौतम
अथर्ववेद	ब्रह्मा	वैशेषिक	कणाद (उलूक)
पूर्वमीमांसा	जैमिनि	उत्तरमीमांसा	बादरायण

- उतरवैदिक काल में निस्क और शतमान मुद्रा ईकाई थी।
- 'गौत्र' नामक संस्था का जन्म उतरवैदिक काल में हुआ।
- याज्ञवल्क्य– गार्गी संवाद का उल्लेख बृहदारणयक उपनिषद में है।
- इन्द्र के स्थान पर प्रजापति सर्वाधिक प्रिय देवता हो गए।
- सत्यमेव जयते का उल्लेख मुण्डकोपनिषद में है।
- यम–नचिकेता वार्त्ता का उल्लेख कठोपनिषद में है।
- महाकाव्य की संख्या दो है– महाभारत एवं रामायण।

- महाभारत को जयसंहिता भी कहते है।
- महाभारत के लेखक महर्षि व्यास है जबकि रामायण के लेखक वाल्मीकि हैं।
- सबसे बड़ा तथा सर्वाधिक लौह पंज अंतरजीखेड़ा से मिला है।
- इस काल में गोत्र व्यवस्था स्थापित हुई।

महाजनपद

- महाजनपदों का उल्लेख छठी शताब्दी ई॰पू॰ में हुआ। महाजनपद का उल्लेख बौद्ध धर्म के अंगुत्तर निकाय एवं जैन धर्म के भगवती सूत्र में मिलता है।
- वज्जि एवं मल्ल गणतंत्र थे।
- सोलह महाजनपदों में सबसे शक्तिशाली मगध था।

महाजनपद	**राजधानी**
पांचाल	अहिच्छत्र, कांपिल्य
अंग	चम्पा
चेदि	शक्तिमती
मगध	राजगृह/गिरीव्रज
कुरू	इन्द्रप्रस्थ
काशी	वाराणसी
मत्स्य	विराट नगर
वत्स	कौशाम्बी
कम्बोज	हाटक/लाजपुर
वज्जि	मिथिला/ वैशाली/विदेह
शुरसेन	मथुरा
कौशल	श्रावस्ती/अयोध्या
अस्मक	पोतन/पोटली
अवन्ति	उज्जैन
गांधार	तक्षशिला
मल्ल	कुशीनारा/पावा

- बौद्ध काल का सबसे बड़ा व शक्तिशाली बैशाली की लिच्छिवि गणराज्य था।
- गांधार व कम्बोज के क्षत्रियों को वर्ताशस्त्रोंप जीविन कहा जाता है।

EduBull.com